राज कॉमिक्स

मूल्य 8.00 संख्या 795

दिव्यास्त्र

भैकाल

1751

परीलोक के विनाश के बाद राजकुमार आलोक महागुरू भोकाल की चमत्कारी शक्तियों के साथ अपनी मां की खोज में विकासनगर पहुंचा तो वहीं का होकर रह गया और कहलाया मानवता और न्याय का रक्षक महाबली भोकाल-

मां
मनुष्य क्या देवता भी जिसके आंचल में पले हैं, लेकिन मातृत्व से भरे इस आंचल से भोकाल सदा वंचित रहा। ना तो वह अपनी जन्म देने वाली मां का आंचल पा सका और न नया जीवन देनेवाली मां का, जहां उसकी परी मां ने उसकी बांहों में दम तोड़ा वहीं जीवनदायिनी उस मां ने भी उसी की गोद में आन्तिम सांस ली...

...जिसे भोकाल चुड़ैल मां समझता रहा, लेकिन वह तो वह ममतामयी मां निकली जिसने चीलानगरी से नीचे गिरे अचेत और मरणासन्न भोकाल को सैकड़ों दुख सहकर नया जीवन दिया और साथ ही दिया देवताओं के उन दिव्यास्त्रों का पता जिन्हें पृथ्वी पर पनप रहे पाप के एक अवतार को समाप्त करने के लिए देवतागण स्वयं पृथ्वी पर छोड़ गये थे तब भोकाल ने मरती हुई उस मां को वचन दिया था कि चाहे उसके प्राण रहे या जायें वह प्राप्त करके ही रहेगा...

©RAJA POCKET BOOK

• संपादक : मनीष गुप्ता.
• लेखक : संजय गुप्ता.
दिव्यास्त्र
• चित्रांकन :- कदन स्टुडियो.
लेकिन क्या मैं अपने वचन को पूरा कर पाऊंगा। क्या मैं इस मनोरम घाटी के बीचों-बीच स्थित इस भयंकर स्थान पर दिव्यास्त्रों को खोज पाऊंगा?
दिव्यास्त्र की खोज में उस भयंकर स्थान के चप्पे-चप्पे की खाक छानता भोकाल...

...उस चोट से कराह उठा-
ओफ्फ!
ये किसने मुझ पर प्रहार किया?

मैंने। अब मैं तुझे बनाऊंगा अपना शिकार।
हे महागुरू! ये क्या चमत्कार है? इतना बड़ा गरूड़
और तो भी मनुष्य की भांति बोलने वाला!

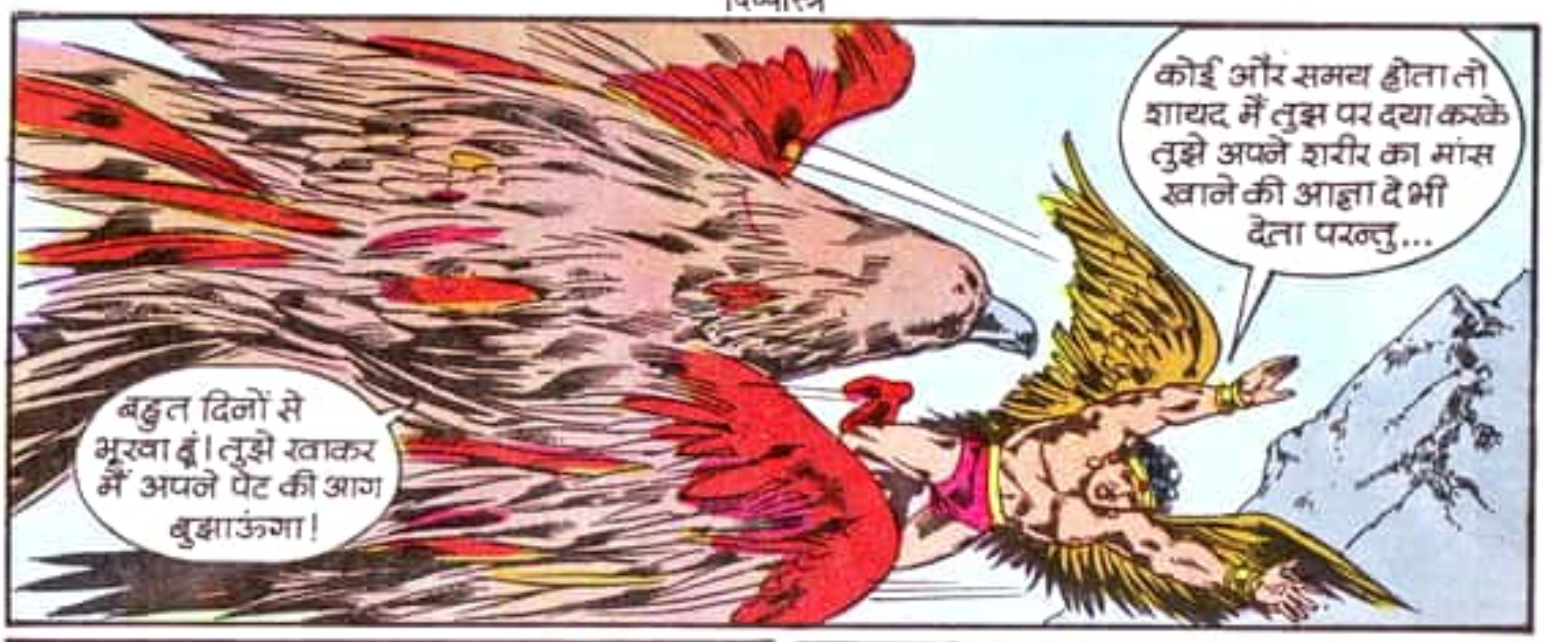

भोकाल के इस वार ने जहां गरूड़ पर कुछ असर नहीं डाला...

और अब अगर भोकाल अत्याधिक चपलता के साथ संभल ना गया होता तो गरूड़ ने उसका आस्तित्व ही समाप्त कर डाला था-

भोकाल ने फुर्ती से चट्टान उठाकर गरुड़ की तरफ उछाली परन्तु गरुड़ ने भी एक और चट्टान उछलकर उसके वार का जवाब दिया-

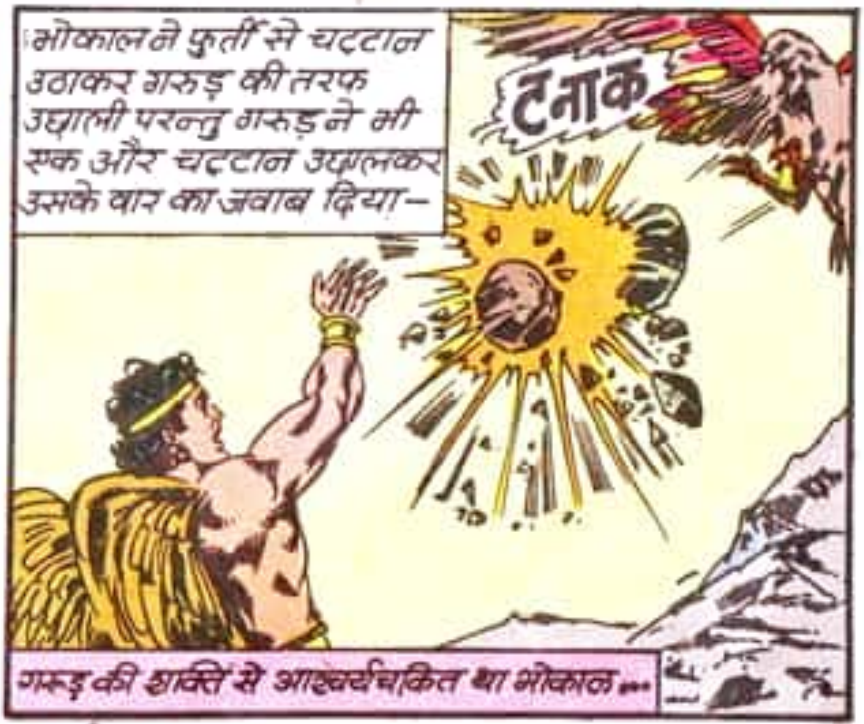

गरूड़ की शक्ति से आश्चर्यचकित था भोकाल...

...कि तभी गरूड़ में आये उस परिवर्तन ने उसे और चकित कर दिया-

ओह!

वह गरूड़ पक्षी गरूड़ मानव का रूप ले रहा है!

इसका मतलब वह कोई साधारण पक्षी नहीं कोई दैविक शक्ति है।

दूसरे ही क्षण लड़ना छोड़कर भोकाल गरूड़ के सामने नतमस्तक होता चला गया-

अगर आपको अपनी क्षुधा शान्त करने के लिए मेरे मांस की आवश्यकता है तो अब मैं आपको रोकूंगा नहीं। आप नोंच लीजिये मेरे मांस को मेरी हड्डियों से परन्तु मेरी आपसे एक प्रार्थना है...

...कृपया इतना मांस अवश्य छोड़ दीजियेगा कि मेरे शरीर में प्राण बचे रह सकें...

...और मैं अपने उद्देश्य की खोज में निकल सकूं।

भोकाल के चुप होने के साथ ही गरूड़ ने भोकाल की तरफ बढ़ना आरम्भ कर दिया।

लेकिन अब वह भोकाल को शिकार बनाने के लिए नहीं बल्कि उसे आशीर्वाद देने के लिए आगे बढ़ा था-

उठो पुत्र! हम समझ गये कि तुमने हमें पहचान लिया। हम भगवान विष्णु के वाहन गरूड़ हैं। तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए भगवान ने हमें स्वयं यहां भेजा था। भगवान देखना चाहते थे कि तुममें दिव्यास्त्र प्राप्त करने की योग्यता है भी या नहीं।

तुमने अपनी योग्यता सिद्ध कर दी, इसलिए हम तुम्हें आशीर्वाद के साथ-साथ यह पुस्तक भी देते हैं।

दिव्यास्त्रों को खोजने में यह पुस्तक तुम्हारी बहुत सहायता करेगी।

पुस्तक भोकाल को सौंपकर गरूड़ अंतर्धान हो गये।

और भोकाल बढ़ गया दिव्यास्त्रों की खोज में--

इस पुस्तक के अनुसार इस घाटी में मुझे सबसे पहले जिस दिव्यास्त्र को खोजना है वह है भगवान श्रीकृष्ण का सुदर्शन चक्र...

...वह रहा!

सुदर्शन चक्र को देखकर चमक उठीं भोकाल की आंखें...

...अगले ही क्षण सोच से सिकुड़ती चली गईं-

ओह! सुदर्शन चक्र की सुरक्षा के लिए तो एक भयानक सिंह तैनात है!

इसको अपने रास्ते से हटाये बिना मैं चक्र तक नहीं...

गर्र्र्र्र

...पहुंच सकता!

ओह!

गर्र्र्र्र

भोकाल की सोच से कहीं पहले सिंह उस पर आक्रमण कर चुका था-

पलक झपकते ही भोकाल नीचे और सिंह उसके ऊपर था-

और अब उसका जबड़ा भोकाल को दबोचने को उसकी तरफ बढ़ रहा था!

उफ!

लेकिन इतनी आसानी से मौत का निवाला बन जाने वालों में से कहां था वह महाबली-

भोकाल ने सिंह को एक तरफ उछाल दिया-

हंसी के साथ आश्चर्य से भोकाल की आंखें फैलती चली गईं-

सिंह बेहद तेजी से चक्र के इर्दगिर्द घूमने लगा-

और एक क्षण बाद ही--

!!

चक्र से टकराकर सिंह के परखच्चे उड़ गये-

सन्न रह गया भोकाल-

सुदर्शन चक्र बेहद तेज गति से घूम रहा है। उसके घूमने की गति की चपेट में जो भी आता है। वह खिंचता हुआ चक्र के केंद्र की तरफ बढ़ जाता है...

...और फिर सैकड़ों टुकड़ों में बदल जाता है!

ऐसे में सुदर्शन चक्र को प्राप्त करने के लिए एक भी कदम आगे बढ़ाना साक्षात् मृत्यु को निमंत्रण देना है।...

...फिर भी दिव्यास्त्र प्राप्त करने के लिए मुझे इस मृत्यु से तो खेलना होगा क्योंकि... वीर वो नहीं होते जो किनारे पर बैठे सोचते रहते हैं। वीर वोही होते हैं जो नदी पार करने के लिए भंवर से भी टकरा जाते हैं।

प्राणों की चिन्ता छोड़ चुका था भोकाल-

मैं भी स्वयं को इस भंवर के हवाले कर दूंगा परन्तु ज़रा भी चूक हो गई तो चक्र की चपेट में आकर मेरे शरीर के सैकड़ों टुकड़े हो जायेंगे।

चक्र के घूमने से उत्पन्न भंवर में प्रवेश करके भोकाल ने स्वयं को उस रास्ते पर डाल दिया था जिस पर सामने मौजूद था विनाश...

... और सिर्फ विनाश—

लेकिन जो महाबली होते हैं वे अच्छी तरह से जानते हैं कि रास्ते में खड़े विनाश को कैसे टालना होता है...

...और कैसे उससे बचकर...

... अपने उद्देश्य को प्राप्त करना होता है भोकाल गोता लगाकर चक्र के नीचे पहुंच गया—

भगवान इस चक्र को अपनी तर्जनी उंगली में धारण करते हैं।

भोकाल की उंगली में आते ही चक्र की विभीषिका कम हो गयी।

मां ने सही कहा था। दिव्यास्त्र मनुष्य की परीक्षा लेते हैं कि उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न करने वाला मनुष्य उनके योग्य है भी या नहीं।

अब मुझे प्राप्त करना है भोले शंकर का त्रिशूल परन्तु क्या मैं उसे प्राप्त करने योग्य हूं?
इस प्रश्न का उत्तर तो तभी मिलेगा जब मुझे नजर आयेगा...
...भगवान शिव का त्रिशूल-
वह रहा! सामने अधर में लटका हुआ! उसे प्राप्त करना तो एकदम आसान होगा क्योंकि सामने नहीं दिख रही है कोई भी...
अड़चन!
ओह!
अपने पंखों की सहायता से उड़ता हुआ भोकाल बेहद तेजी से किसी अदृश्य दीवार से टकराया...
...और चकराकर नीचे आ गिरा-
त्रिशूल के चारों तरफ कोई अदृश्य दीवार खड़ी हुई है। लेकिन वह दीवार खड़ी नहीं रहेगी...
...तोड़ डालूंगा मैं उस दीवार को।
भड़ाक
अपनी पूरी शक्ति से अदृश्य दीवार को तोड़ने में जुट गया भोकाल-

लेकिन सफल नहीं हो पाया। कुछ देर बाद ही थक हार कर बैठ गया वह-

और तब उसे समझ में आई वह बात-

शक्ति से सामने वाली अदृश्य दीवार को हटाने का प्रयत्न करना बेकार है।

तो फिर क्या करूं?

भक्ति! कहावत है शक्ति से जो कार्य वर्षों में नहीं हो पाता भक्ति से वह क्षण भर में हो जाता है। यह कार्य भक्ति से पूर्ण होगा...

...भगवान शिव की भक्ति से!

क्योंकि भगवान शिव ने अपनी भक्ति करने वाले भक्त को कभी निराश नहीं किया!

पूरी श्रद्धा से भोकाल ने वहीं शिवलिंग बनाया-

और फिर दूध, धतूरा और भांग का प्रबंध कर शिवलिंग पर अर्पित किया-

शीघ्र ही भोकाल की भक्ति रंग लाई-

मेरी भक्ति से प्रसन्न होकर निसंदेह ही उस दिव्य प्रकाश के माध्यम से भगवान शिव स्वयं प्रकट हो रहे हैं।

दिव्य प्रकाश को देखकर भोकाल के चेहरे पर फैल गई प्रसन्नता...

... दूसरे ही क्षण आश्चर्य में बदलती चली गई...

... क्योंकि भोकाल के सामने भगवान शिव नहीं बल्कि खड़ा था-

नंदी!

समझा! भगवान शिव ने अपने वाहन नंदी को मेरी सहायता के लिए भेजा है!

नहीं! नंदी मेरे लिये सहायता का नहीं...

फांsss

... मृत्यु का अवतार बनकर आया है!

मैं इससे बच नहीं सकता इसलिए इससे भिड़ने के सिवा मेरे पास और कोई चारा नहीं है।

ओफ्फ!

भोकाल ने अपने शक्तिशाली हाथों से नंदी के सींगों को पकड़ लिया-

लेकिन इतने शक्तिशाली कहां थे भोकाल के हाथ कि वे उस नंदी की शक्ति का सामना कर पाते जिसे भोले भण्डारी की सवारी होने का गौरव प्राप्त था-

हाssssss

भड़ाक

मेरी प्रतिक्रिया ने नंदी के क्रोध को और भी ज्यादा भड़का दिया है!

नंदी के भीषण प्रहार से भोकाल एक बार फिर बच गया था -

लेकिन वह चट्टान ना बच पाई -

ओह! नंदी के प्रहार ने उस मजबूत और बड़ी चट्टान को खील-खील कर डाला। तो मेरी क्या दशा...

भड़ाक

...होगी।

आहह!

भोकाल की ठीक छाती पर हुआ था नंदी का वह प्रहार --

जिसने भोकाल को भौचक्का कर दिया --

चट्टान के परखच्चे उड़ा देने वाला नंदी का भीषण प्रहार मुझे चट्टान की भांति नहीं कुचल पाया।...

...ऐसा कैसे हुआ?

यह जरूर भगवान कृष्ण के सुदर्शन चक्र का प्रताप है।

अब मुझे अपना सारा ध्यान नंदी के अगले वार से बचने में लगाना चाहिए।...

...मेरे ठीक पीछे वह अदृश्य दीवार है जिसे मैं तोड़ नहीं पाया हूं।

लेकिन जो दीवार मेरे प्रहारों से नहीं टूटी वह...

...नंदी के प्रहार से चकनाचूर हो जायेगी।...

...और ऐसा तब होगा जब मैं ठीक समय पर अपने स्थान से हट जाऊंगा और नंदी अदृश्य दीवार से जा टकरायेगा।

धरती तक का सीना फाड़ देनेवाले नंदी के उस प्रहार के सामने वह अदृश्य दीवार कहां ठहर पाती।

नंदी से अदृश्य दीवार को तुड़वाने में सफल तो हो गया मैं, लेकिन क्या उससे अपने प्राण बचाने में सफल हो पाऊंगा क्योंकि क्रोध से उफनता नंदी मेरी तरफ पलट चुका है...

...अरे!

ये क्या हुआ? मुझ पर आक्रमण करने के स्थान पर नंदी एकाएक शान्त क्यों हो गया?

अचंभित भोकाल के प्रश्नों के प्रत्युत्तर में अचानक गूंजा वधु स्वर-

हमारे एकाएक शान्त होने का कारण तुम्हारी सफलता है पुत्र! हम तुम्हारी परीक्षा ले रहे थे। वास्तव में भगवान के त्रिशूल के यहूं ओर मौजूद अदृश्य दीवार हमारे ही प्रहार से टूटनी थी।

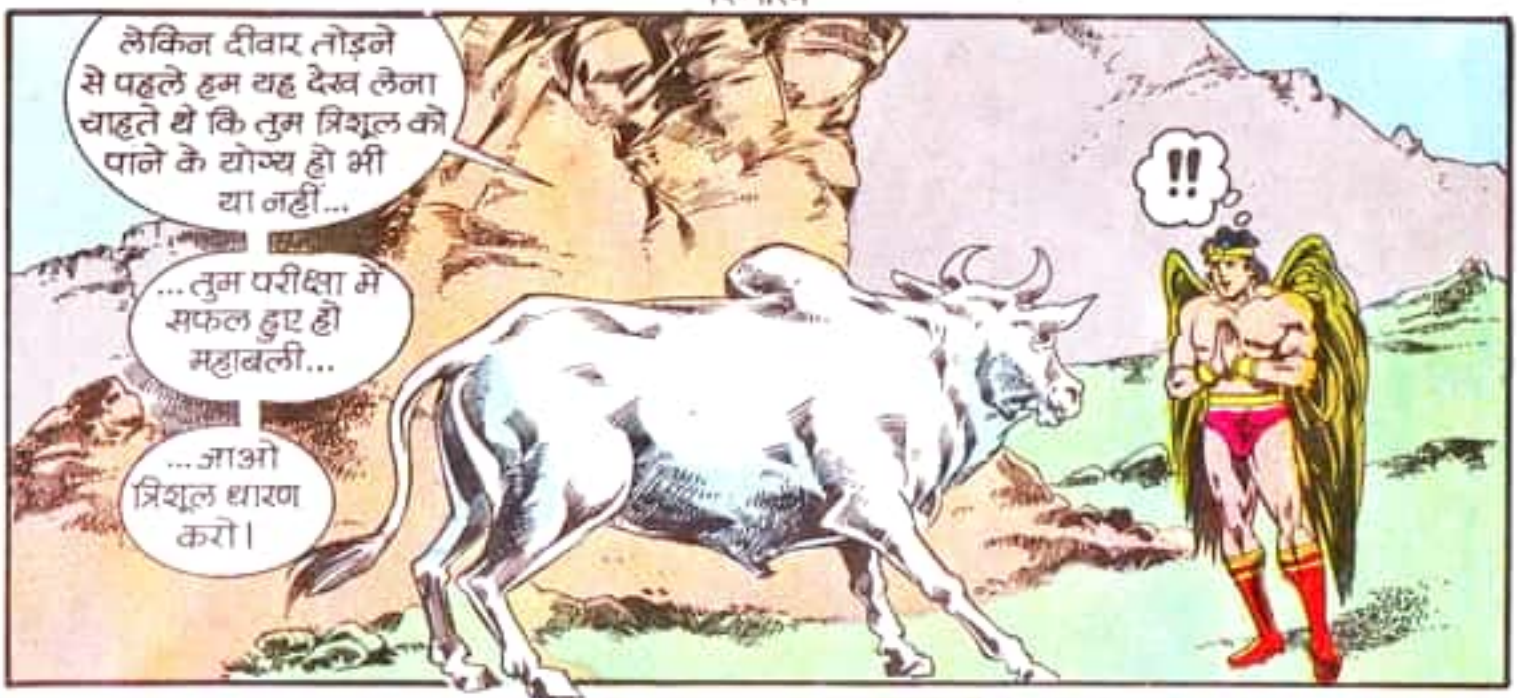
लेकिन दीवार तोड़ने से पहले हम यह देख लेना चाहते थे कि तुम त्रिशूल को पाने के योग्य हो भी या नहीं...
...तुम परीक्षा में सफल हुए हो महाबली...
...जाओ त्रिशूल धारण करो।
!!

भोकाल ने पूरे भक्तिभाव से त्रिपुरारी के प्रलयंकारी त्रिशूल को अपने हाथों में लिया—
जय भोलेनाथ!

भगवान श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र और भगवान शिव के त्रिशूल के पश्चात अब मुझे इस पुस्तक की सहायता से जिस दिव्यास्त्र की खोज करनी है...

...वह है भगवान श्रीराम का धनुष।

...परन्तु क्या बिना कोई परीक्षा दिये मैं इस धनुष को पा सकूंगा?
नहीं।
इस धनुष को पाने के लिए तुम्हें सिद्ध करना होगा कि तुम इसके योग्य हो...
...और इसके लिए तुम्हें इस धनुष की प्रत्यंचा चढ़ानी होगी--
यह परीक्षा तो है परन्तु ऐसी नहीं जो मेरे लिए दुष्कर सिद्ध हो। इस धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाना अधिक कठिनाई भरा कार्य ना होगा।
भ्रम में था भोकाल-
और उसका वह भ्रम धनुष उठाते ही टूट गया-
ओफ्फ! अपनी पूरी शक्ति लगाकर भी मैं प्रत्यंचा को धनुष के दूसरे छोर की तरफ खींचने में सफल नहीं हो पा रहा हूं।
अत्यंत दुष्कर कार्य है यह, लेकिन मानवता की रक्षा के लिए...

...पाप के अवतार के अन्त के लिए मुझे इस दुष्कर कार्य को परिणाम तक पहुंचाना ही होगा।

मजबूती से भोकाल के हाथों में थमी प्रत्यंचा उसके मांस को फाड़कर उसके हाथों में धंस चुकी थी-

लहू से सराबोर हो रही थी भोकाल की बाहें-

लेकिन भोकाल को इसकी सुध कहां थी-

उसे तो मात्र एक ही सुध थी कि उसे किसी भी दशा में प्राप्त करनी है सफलता-

और अपनी जबरदस्त इच्छाशक्ति और कर गुजरने के जज्बे के बल पर उसने वह सफलता प्राप्त भी की-

प्रत्यंचा चढ़ाने में सफल हुआ भोकाल...

... बहुत देर तक ऐसे हांफता रहा मानों वह सैंकड़ों कोस की दूरी को दौड़कर तय करके आया हो-

ओफ्फ! जितने अद्‌भुत हैं भगवान श्रीराम उतना ही अद्‌भुत है पापियों का संहार करने वाला उनका यह धनुष।

अब उसे प्राप्त करनी थी-

खड्ग। काली मां की खड्ग चाहिए मुझे।

और उसे प्राप्त करने के लिए मुझे जाना होगा उस भयानक मुख रूपी गुफा के अन्दर।

ओफ्फ! लहू जमा देने वाला वातावरण है इस गुफा में।

मुझे यहां पूरी तरह सतर्क रहना होगा।

एक-एक कदम फूंक-फूंककर रखता आगे बढ़ रहा था भोकाल-

कहानी 13वें पृष्ठ से जारी

जल्दी ही भोकाल गुफा में मौजूद काली की प्रतिमा तक आ पहुंचा—

काली मां की प्रतिमा के हाथ में थमी वह खड्ग ही वह दिव्यास्त्र है जिसे प्राप्त करने मैं यहां आया हूं...

...और अब उसे प्राप्त कर ही...

...लूंगा।

ओह! नहीं।

अगर भोकाल पूरी तरह चौकन्ना ना होता तो वह एकाएक सामने आये उस खतरे को ना देख पाता—

और ना अपने प्राणों की रक्षा कर पाता—

ओफ्फ! काली की खड्ग ने तो मेरी गर्दन को मेरे धड से अलग कर ही दिया था!

खड्ग को पिछली तरफ से प्राप्त करने का प्रयत्न करना होगा!

पीछे की तरफ से ही क्या भोकाल किसी भी तरफ से खड्ग तक नहीं पहुंच पाया—

सांय

टनाक

आखिर उसे अपना वह प्रयास छोड़ना ही पड़ा—

काली को प्रसन्न किये बिना खड्ग हासिल करने की सोचना व्यर्थ है...

...परन्तु काली को प्रसन्न किया कैसे जाये?

भोकाल की आंखें एक बार फिर काली की प्रतिमा पर जा टिकीं।

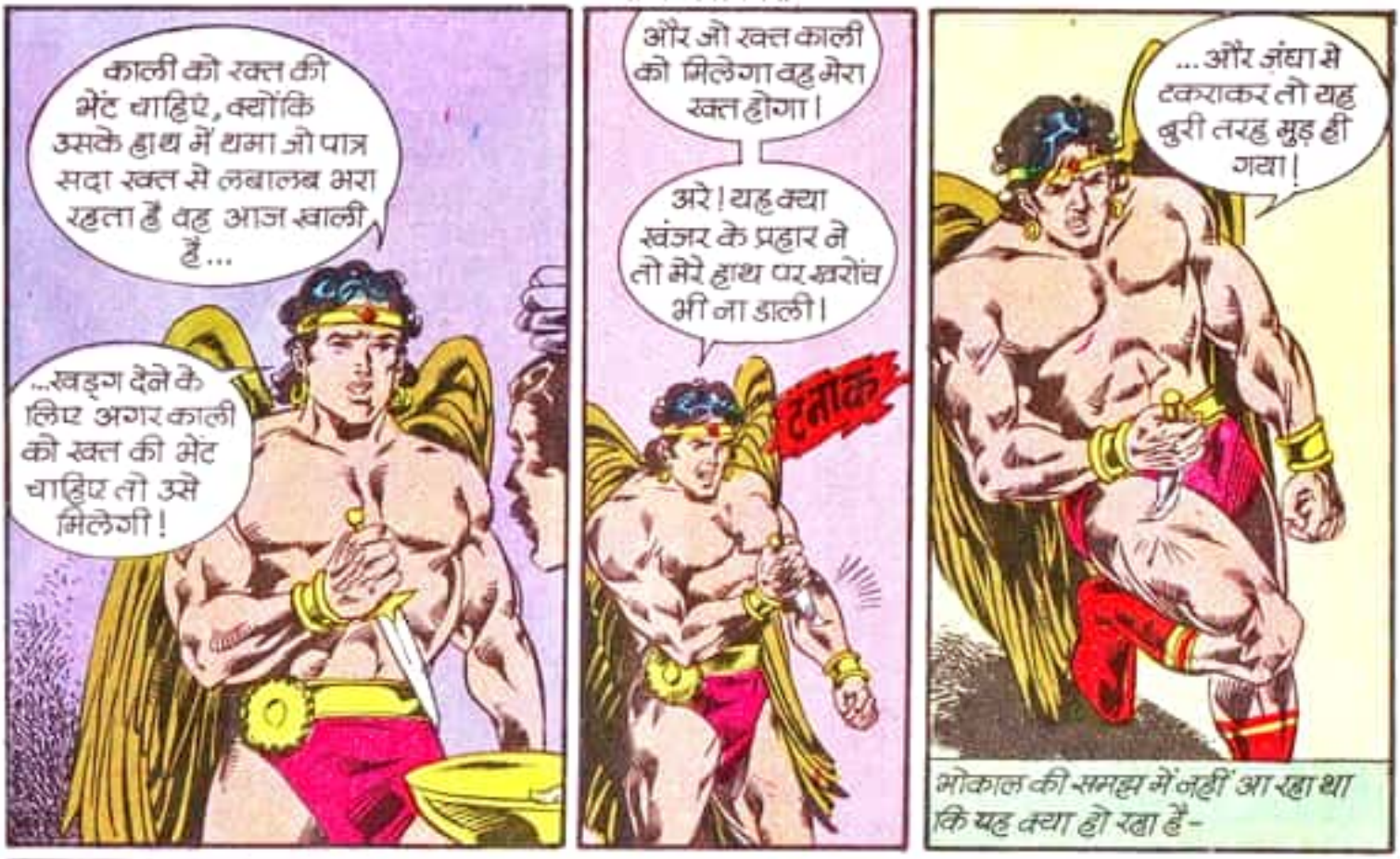
काली को रक्त की भेंट चाहिए, क्योंकि उसके हाथ में थमा जो पात्र सदा रक्त से लबालब भरा रहता है वह आज खाली है...
...खड्ग देने के लिए अगर काली को रक्त की भेंट चाहिए तो उसे मिलेगी!
और जो रक्त काली को मिलेगा वह मेरा रक्त होगा।
अरे! यह क्या खंजर के प्रहार ने तो मेरे हाथ पर खरोंच भी ना डाली।
टनाक
...और अंधा से टकराकर तो यह बुरी तरह मुड़ ही गया!
भोकाल की समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है-

लेकिन फिर भी उसने अपना प्रयास नहीं छोड़ा-
जो लहू खंजर के प्रभाव से नहीं निकला, वह चट्टान से सिर टकराने से जरूर निकलेगा।
ये क्या! इतनी तेज टक्कर के पश्चात् भी मेरा सिर नहीं फूटा। लहू नहीं निकला।
अब भोकाल के दिमाग ने काम करना आरम्भ कर दिया—
मेरे सैकड़ों प्रयासों के पश्चात् भी शरीर से लहू की एक बूंद भी नहीं निकली है। इसका एक ही मतलब है कि इस स्थान पर किसी भी तरह अपने शरीर पर जख्म करना असंभव है।...
...और इसी के साथ असंभव है काली मां को रक्त की बलि देना।

नहीं! असंभव कुछ नहीं है। काली मां को रक्त मिलेगा और ऐसा कैसे होगा, मैं समझ गया!

भोकाल दृढ़ कदमों से काली मां की प्रतिमा की तरफ बढ़ गया-

यह जानते-बूझते कि काली की प्रतिमा के पास जाने का एक ही मतलब है...

...मौत...

...क्योंकि किसी के पास आते ही प्रतिमा के हाथ में थमी खड्ग तेजी से घूम जाती है...

...और उससे ना बचा जाये तो वह मौत दे देती है-

खड्ग घूमी-

लेकिन भोकाल नहीं बचा क्योंकि...

...वह बचने के लिए बढ़ा ही नहीं था-

वह तो अपने शरीर की बलि देने के लिए बढ़ा था-

काली के हाथ में थमी चमत्कारी खड्ग एक झटके से उसका हाथ ले उड़ी...

...इसी के साथ वह निकला गर्म-गर्म रक्त-

लेकिन भोकाल ने रक्त की एक भी बूंद को व्यर्थ नहीं जाने दिया-

व्यर्थ जाने भी कैसे देता-

काली के हाथ में थमे पात्र को जल्द-से जल्द अपने रक्त से भरकर वह हासिल जो करना चाहता था-

खड्ग—
आपकी जो खड्ग तीनों लोकों की छाती फाड़ सकती है तो वह भला मेरे शरीर को कैसे ना काट पाती।
जय काली मां!
मैं धन्य हूं जो अपने हाथ का बलिदान देकर आपकी खड्ग पाने में सफल हुआ।
खड्ग तो तुमने पा ली पुत्र...
... परन्तु इसे संभालने के लिये तुम्हें दोनों हाथ चाहिए!
!!
आश्चर्यजनक ढंग से भोकाल का कटा हुआ हाथ अपने स्थान पर आ जुड़ा।

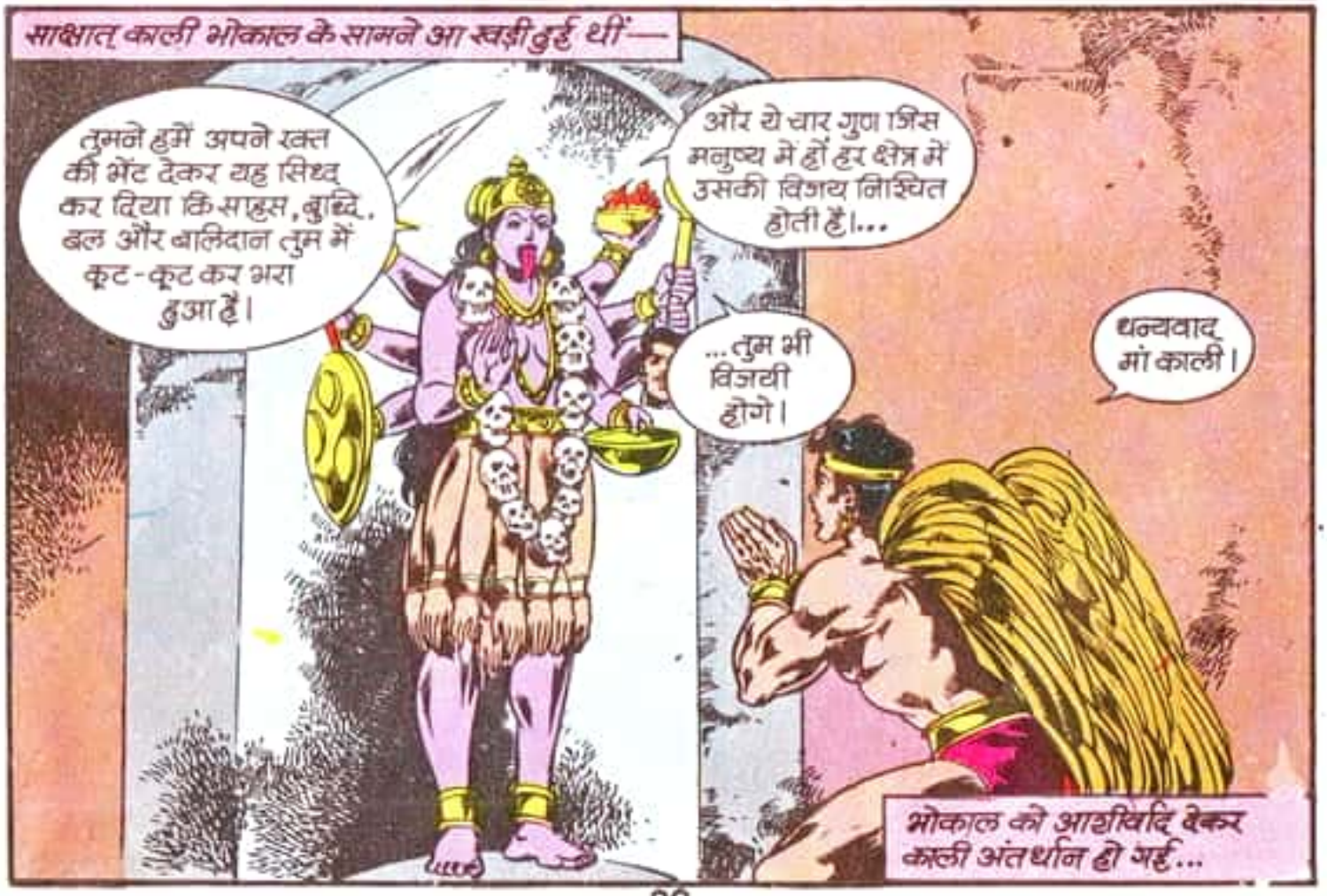
साक्षात् काली भोकाल के सामने आ खड़ी हुई थीं—
तुमने हमें अपने रक्त की भेंट देकर यह सिध्द कर दिया कि साहस, बुध्दि, बल और बलिदान तुम में कूट-कूट कर भरा हुआ है।
और ये चार गुण जिस मनुष्य में हों हर क्षेत्र में उसकी विजय निश्चित होती है।...
...तुम भी विजयी होगे।
धन्यवाद मां काली।
भोकाल को आशीर्वाद देकर काली अंतर्धान हो गई...

...और फिर भोकाल चल पड़ा दूसरे दिव्यास्त्र की खोज में-

अब अन्य दिव्यास्त्रों की तलाश है मुझे जिसमें मुख्य है वीर हनुमान की प्रलयंकारी गदा।...

...ये भगवान् गणेश का चमत्कारी अस्त्र अंकुश-

लेकिन इस स्थान पर अंकुश है कहां? कहीं दिखाई नहीं दे रहा जबकि इस पुस्तक में लिखा है कि अंकुश सामने वाली गणेश की प्रतिमा के सामने ही रखा है।...

...सामने तो गणेशजी के वाहन चूहों के सिवा कुछ नहीं है।...सब कुछ चूहों से अटा पड़ा है।

एक क्षण!...अगर यहां की हर वस्तु चूहों से अटी पड़ी है तो फिर निसंदेह चूहों के ढेर के नीचे ही कहीं होगा...

...अंकुश!

...वह रहा!

जैसे ही भोकाल ने गणेश की प्रतिमा के सामने से चूहों को भगाया, उसके नीचे रखा अंकुश नजर आने लगा-

इसी के साथ इन दो आंखों में नजर आने लगी हिंसक चमक-

और अपने शिकार पर झपट पड़ने के भाव-

और निसंदेह ही उनका 'शिकार' था भोकाल-

जो अंकुश को उठाने अपना हाथ बढ़ा चुका था-

लेकिन वह अंकुश को छू भी नहीं पाया...

... कि उस पर टूट पड़ी वह प्रलय—

चीऽऽऽऽऽऽऽ

हे देवता! इतना विशाल और भयंकर चूहा!

इससे बचना होगा क्योंकि इसकी चपेट में आने का मतलब है अपने जीवन को...

...समाप्त करना।

ओफ्फ!

चीऽऽऽऽऽ

बचने के हर प्रयास के बावजूद भी भोकाल अन्ततः उसकी चपेट में आ ही गया...

...और जीवन के लिए जल-बिन मछली की भांति छटपटाने लगा-

अहह! फौलाद सी शक्ति है इसकी पकड़ में, जितना मैं इससे छूटना चाहता हूं उतना ही उलझता जा रहा हूं!...

...अब तो इससे स्वयं को बचाने का एक ही उपाय है कि मैं प्रयोग करूं...

...कोई दिव्यास्त्र!

भोकाल का हाथ काली के खड्ग पर जम गया-

दूसरे ही क्षण भोकाल के हाथ में थमी खड्ग हवा में लहरा उठी-

अब बस बिजली सी ही कौंधनी थी और विशाल चूहे की गर्दन उसके धड़ से अलग होनी ही थी-

लेकिन ऐसा नहीं हो पाया क्योंकि अनायास ही रुक गये भोकाल के हाथ-

...ये क्या अनर्थ करने जा रहा था मैं। अपने प्राण बचाने के लिए काली के खड्ग जैसे दिव्यास्त्र से इस विशाल चूहे को लक्ष्य बना रहा था...

...यह भूलकर कि इस दिव्यास्त्र का लक्ष्य है पृथ्वी पर बोझ बना इस युग का पाप का सबसे बड़ा अवतार

ओफ्फ! मेरी भूल से अभी दिव्यास्त्र का लक्ष्य चूक जाता

परन्तु अब ऐसा नहीं होगा। मैं काली की खड्ग का प्रयोग नहीं करूंगा। पूरे विश्व को बचाने के लिए मैं संघर्ष करूंगा।

भोकाल ने काली की खड्ग को अपने हाथ से निकल जाने दिया-

इसी के साथ उस विशाल चूहे ने भोकाल को अपनी पकड़ से मुक्त कर दिया-

इसने तो मुझे छोड़ दिया।...परन्तु क्यों...?

क्योंकि तुम परीक्षा में सफल हुए। दिव्यास्त्र पाकर तुम उसका प्रयोग करने के लिए कितने उतावले हो यही देखना चाहते थे हम!

आगे बढ़ो महाबली और भगवान का अंकुश प्राप्त करो। अब तुम्हें कोई नहीं रोकेगा!
धन्यवाद मूषकराज!

भोकाल ने आगे बढ़कर अंकुश उठा लिया-
भगवान गणेश के इस अंकुश से तो पर्वतों का सीना भी फाड़ सकता हूं मैं।

कुछ क्षणों बाद ही भोकाल अपने अन्तिम लक्ष्य की तरफ बढ़ रहा था---
मैं बहुत से दिव्यास्त्र प्राप्त कर चुका हूं। अब महावीर हनुमान की गदा के साथ ही मेरी दिव्यास्त्रों की खोज समाप्त हो जायेगी!

और वह गदा मुझे मिलेगी इस घाटी में।
भोकाल ने उस घाटी में प्रवेश किया--

और शीघ्र ही हनुमान की प्रलयंकारी गदा तक जा पहुंचा--

जो गदा पवनपुत्र हनुमान के हाथों में सुशोभित रहती थी उसे उठाने के लिए मुझे अपनी समस्त शक्ति का प्रयोग करना होगा!

पूरी श्रद्धा से गदा की तरफ उठते भोकाल के कदम...

...अचानक लड़खड़ा गये-

दूसरे ही क्षण जमीन पर पड़ा धूल चाटता नजर आ रहा था भोकाल-

यह गदा हमारे पास वानरराज हनुमान की धरोहर है। इस पर सिर्फ वही मनुष्य अधिकार पा सकता है जो हमारे सरदार...

...कपिराज को द्वंदू में हरा दे।

यह वानर साधारण तो लग रहा है, लेकिन इसमें अवश्य ही ऐसा कुछ होगा जो किसी के भी छक्के छुड़ा सकता है।

इससे मुकाबला कांटे का होगा।
भोकाल को यह तो आभास था कि मुकाबला आसान ना होगा–

लेकिन यह उसने सोचा भी नहीं था वह मुकाबला इतना कठिन निकलेगा...

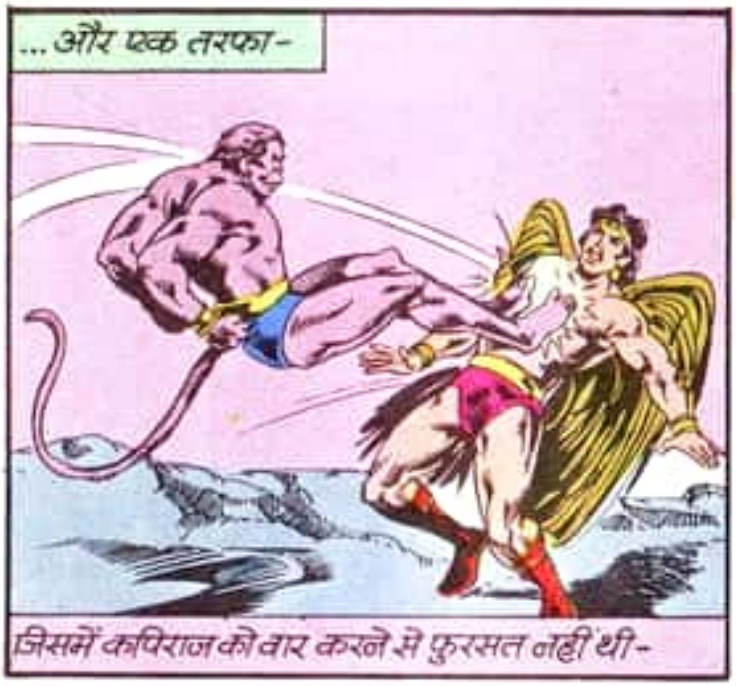
...और एक तरफा–
जिसमें कपिराज को वार करने से फुरसत नहीं थी–

और भोकाल को वार सहने से–

कपिराज के सामने दूध मुंहा बच्चा साबित हो रहा था वह भोकाल जिसे सारा विश्व महाबली के नाम से पुकारता था–

एकदम नौसीखिया नजर आ रहा था वह भोकाल जिसने अकेले अपने बल पर बड़े-बड़े युध्द जीते थे-

आहहsss इसके वारों में सैकड़ों हाथियों सा बल और शरीर में हजारों चीतों जैसी फुर्ती भरी हुई है...

इसके प्रहारों के तूफान के आगे मेरी शक्ति तिनके के समान उड़ती नजर आ रही है।

आहहsss

इस बार जो गिरा भोकाल तो...

... कपिराज ने उसे फिर उठने का अवसर नहीं दिया-

मेरे पांव के नीचे तुम्हारे दोनों हाथ दबे हैं वीर मनुष्य! अगर तुम उन्हें निकालने में सफल हो जाओ तो हम यह द्वंद्व तुमसे हार जायेंगे।

इसकी शक्ति और फुर्ती का मुकाबला करना मेरे लिए कठिन है, इसलिए मुझे एक अवसर मिला है कि मैं इसके पांव को उठाकर...

...उसे पराजित कर दूं।

ओह! यह तो मैं इसके पांव को तिलभर भी नहीं हिला पाया।

परन्तु जो अवसर मुझे मिला है अगर मैं उसमें चूक गया तो गदा के साथ-साथ अपने प्राण भी खो दूंगा इसलिए...

...मुझे इस वानर के पांव को अपने हाथों से उठाना ही होगा।

कपिराज के पांव को उठाने के प्रयास में दांव पर लगा हुआ था भोकाल का सारा बल-

हर हाल में गदा पाने की सारी इच्छाशक्ति...

...और सारी निष्ठा—

जय बजरंग बली

ओह!

!!

!!

!!

भोकाल ने चमत्कार ही किया था वह—

जिसने सभी वानर मानवों को चमत्कृत कर दिया—

तुम धन्य हो महाबली, जिस पांव को रावण के दरबार के बड़े-बड़े महारथी हिला ना सके उसे तुमने उखाड़ फेंका।

रावण के दरबार के महारथी! इसका मतलब आप...

...महाबली अंगद हैं।

...मुझे क्षमा करें वानर श्रेष्ठ...

उठो पराक्रमी! अपने पराक्रम से तुमने जो चमत्कार कर दिखाया है उसके लिए तुम क्षमा के नहीं...

...पवनपुत्र की गदा के हकदार हो।

सम्भालो इसे!

भोकाल ने हनुमान की गदा अपने हाथों में सम्भाली—

... और बन गया दिव्यास्त्रधारक भोकाल –
अब पूरी तरह तैयार था भोकाल पृथ्वी से पाप के अवतार का नाश करने के लिए।
समाप्त